मियावाकी पद्धति

चर्चा में क्यों?

प्रयागराज नगर निगम ने शुद्ध वायु उपलब्ध कराने और स्वस्थ वातावरण को बढ़ावा देने के लिये प्रयागराज में कई स्थानों पर **घने वन** विकसित किये हैं।

- **जापानी मियावाकी पद्धति** का उपयोग करते हुए, निगम ने **कई ऑक्सीजन बैंक स्थापित किये** जो अब हरे-भरे वनों में बदल गए हैं।

मुख्य बिंदु

- **परियोजना के लाभ:**
  - यह पहल **औद्योगिक अपशिष्ट** के प्रबंधन में सहायता करती है तथा धूल, गंदगी और दुर्गंध को कम करती है।
  - इससे शहर की वायु गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार होगा तथा **पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिलेगा।**
  - मियावाकी वन **वायु और जल प्रदूषण को कम** करने, **मृदा अपरदन** को रोकने और जैव विविधता को बढ़ाने में सहायता करते हैं।
- **पर्यावरणीय प्रभाव:**
  - ये वन गर्मियों के दौरान दिन और रात के तापमान के अंतर को कम करते हैं।
  - वे जैव विविधता को बढ़ाते हैं, मृदा की उर्वरता में सुधार करते हैं और जानवरों और पक्षियों के लिये आवास बनाते हैं।
  - इस पद्धति के माध्यम से विकसित बड़े वन **तापमान को 4 से 7 डिग्री सेल्सियस तक कम कर देते हैं।**
- **मियावाकी जंगलों में प्रजातियों की विविधता:**
  - **फल देने वाले वृक्ष:** **आम**, महुआ, **नीम**, पीपल, **इमली**, आंवला और बेर।
  - **औषधीय और सजावटी पौधे:** तुलसी, ब्राह्मी, **हिबिस्कस**, कदम्ब, बोगनवेलिया और जंगल जलेबी।
  - **अन्य प्रजातियाँ:** अर्जुन, सागौन, **शीशम**, बाँस, कनेर (लाल और पीला), टेकोमा, कचनार, **महोगनी**, नींबू और सहजन (Drumstick)।

मियावाकी पद्धति

- **परिचय:**
  - **1970 के दशक में जापानी वनस्पतिशास्त्री अकीरा मियावाकी** द्वारा विकसित इस पद्धति से **सीमित स्थानों में घने जंगल तैयार किये जाते हैं।**
  - इसे '**पॉट प्लांटेशन मेथड**' के नाम से जाना जाता है, इसमें तेज़ी से विकास के लिये देशी प्रजातियों को एक दूसरे के निकट लगाया जाता है।
- **मुख्य विशेषताएँ एवं लाभ:**
  - पौधे घने वृक्षारोपण वाले प्राकृतिक वनों की संरचना की अनुकरण करते हुए **10 गुना अधिक तेज़ी से विकसित** होते हैं।
  - मृदा की गुणवत्ता, जैव विविधता और कार्बन अवशोषण में सुधार होता है।
  - शहरी क्षेत्रों में **प्रदूषित और बंजर भूमि को हरित पारिस्थितिकी तंत्र में बदलने के लिये प्रभावी।**

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/miyawaki-technique